

Curriculum Approaches पाठ्यक्रम उपागम

Curriculum approach are heart and soul of curriculum of education. These approach shows the viewpoints of curriculum development and design, the role of the learners, the teachers, the curriculum specialists in planning the curriculum. It also includes the goals and objectives of the curriculum. Here we are going to learn some Curriculum approach i.e. Critical, Learner Driven, Traditional Approaches.

Curriculum Approaches पाठ्यक्रम उपागम

Curriculum develops construction with following elements: Curriculum, teachers, students and context. These are traditional approach, learner approach and critical approach

पाठ्यक्रम निम्नलिखित तत्वों के साथ निर्माण का विकास करता है: पाठ्यक्रम, शिक्षक, छात्र और संदर्भ। ये पारंपरिक उपागम, शिक्षार्थी उपागम और आलोचनात्मक उपागम हैं।

1. **The traditional approach:** In the traditional approach the learner masters the 'rules' of letter writing to precis writing; but he is not able to apply this knowledge to his/her own letters or summaries. He is confused when he gets back his composition with the award of a poor grade and a lot of read marks. On the other hand, this approach makes less demands on the teacher. He can conduct composition classes without any preparation. He simply walks into the classroom and sets an exercise for the learners.

पारंपरिक उपागम: पारंपरिक उपागम में शिक्षार्थी को पत्र लेखन के नियमों में महारत हासिल करने के लिए लिखना होता है; लेकिन वह इस ज्ञान को अपने पत्रों या सारांशों पर लागू करने में सक्षम नहीं है। खराब ग्रेड और ढेर सारे लाल निशान के साथ अपनी रचना को वापस पाने पर वह उलझन में रहता है। दूसरी ओर, यह उपागम शिक्षक की कम मांग करता है। वह बिना किसी तैयारी के रचना वर्ग का संचालन कर सकता है। वह बस कक्षा में चलता है और शिक्षार्थियों के लिए एक अभ्यास निर्धारित करता है।

Advantage of Traditional Approach पारंपरिक उपागम का लाभ

- Students are used to it and it fits their idea of what school should be.
- Learning discrete skills in step – by – step.
- It is used to justify the programs achievement.
- Test scores can be easily examined and explained.
- It is much efficient in the field of resourceful development.
- Teachers , adults – can easily adopt this approach.
- The traditional approach
- छात्रों को इसके लिए इस्तेमाल किया जाता है और यह उनके विचार के अनुकूल होता है कि स्कूल क्या होना चाहिए।
- अधिगम कौशल को चरण दर चरण अनिर्ंतर बनाता है।
- इसका उपयोग कार्यक्रमों की उपलब्धि को सही ठहराने के लिए किया जाता है।
- टेस्ट स्कोर को आसानी से जांचा और समझाया जा सकता है।
- यह संसाधन विकास के क्षेत्र में बहुत कुशल है।
- शिक्षक, वयस्क आसानी से इस दृष्टिकोण को अपना सकते हैं।
- पारंपरिक उपागम सुलभ है।

Disadvantages of Traditional Approach पारंपरिक उपागम के नुकसान

- The traditional approach omits the importance of learner experience, requiring a learner to accept, rather than challenge, the information being transmitted.
- This approach can work against an adults needs.
- This approach to accumulate years of knowledge and skills to apply in the future.
- The discrete skills automatically transfer to any variety of situations out – side the classroom.
- The role of students are in passive.
- It supports the view that low literacy skills.
- पारंपरिक उपागम शिक्षार्थी अनुभव के महत्व को छोड़ देता है, एक शिक्षार्थी को स्वीकार करने के लिए पुनः चुनौती देता है, चुनौती के बजाय, प्रेषित होने वाली जानकारी।
- यह उपागम एक वयस्क की जरूरत के लिए काम कर सकता है।
- यह दृष्टिकोण भविष्य में लागू करने के लिए ज्ञान और कौशल के वर्षों को जमा करता है।
- असतत कौशल कक्षा के बाहर किसी भी प्रकार की परिस्थितियों में स्वचालित रूप से स्थानांतरित हो जाते हैं।
- छात्रों की भूमिका निष्क्रिय है।
- यह कम साक्षरता कौशल विचार का समर्थन करता है।

2. **Learner – Driven approach** : Student centered learning (student) driven learning is also known as learner – centered education.

शिक्षार्थी-प्रेरित उपागम: छात्र केंद्रित शिक्षा (छात्र) संचालित शिक्षण को शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षा के रूप में भी जाना जाता है।

- It is method of teaching that shift the focus of instruction from the teacher to the student.
- यह शिक्षण की विधि है जो शिक्षक से निर्देश का ध्यान छात्र में स्थानांतरित करता है
- It also focuses on skills and practices that enable life long learning and independent problem – solving. This theory and practice is based on the constructive learning theory that emphasizes the learners critical role in constructing meaning from new information and prior experience.
- यह उन कौशलों और प्रथाओं पर भी ध्यान केंद्रित करता है जो जीवन भर सीखने और स्वतंत्र समस्या को हल करने में सक्षम बनाती हैं। यह सिद्धांत और अभ्यास रचनात्मक शिक्षण सिद्धांत पर आधारित है जो सीखने वालों को नई जानकारी और अग्रिम अनुभव से अर्थ निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देता है
- Learning – driven centered classroom students choose what they will learn, how they will learn and how they will assess their own learning. This theory is in contrast to traditional education also dubbed ‘teacher – centered learning’, which situates the teacher as the primary ‘active’ role while students take a more ‘passive’, receptive role.
- अधिगम-प्रेरित केन्द्रित कक्षा के छात्र चुनते हैं कि वे क्या सीखेंगे, वे कैसे सीखेंगे और वे अपने स्वयं के सीखने का मूल्यांकन कैसे करेंगे। यह सिद्धांत पारंपरिक शिक्षा के विपरीत है जिसे 'शिक्षक केंद्रित शिक्षा' भी कहा जाता है, जो शिक्षक को प्राथमिक 'सक्रिय' भूमिका के रूप में प्रस्तुत करता है, जबकि छात्र अधिक 'निष्क्रिय', ग्रहणशील भूमिका निभाते हैं।

Advantages of Learner – Driven Approach शिक्षार्थी प्रेरित उपागम के लाभ

- Students see their needs clearly reflected in the classroom, which is very motivating.
- It creates a direct link between class work and learners need.
- Learners can more easily transfer new skills day to day.
- It encourages learners persistence.
- It develops/provides a rich picture of adult learning and moves beyond the images of DBE merely as “School big People”.
- छात्र अपनी आवश्यकताओं को कक्षा में स्पष्ट रूप से परिलक्षित देखते हैं, जो बहुत ही प्रेरक है।
- यह कक्षा के काम और सीखने वालों के बीच एक सीधा संबंध बनाता है।
- शिक्षार्थी दिन-प्रतिदिन नए कौशल को आसानी से स्थानांतरित कर सकते हैं।
- यह शिक्षार्थियों की दृढ़ता को प्रोत्साहित करता है।
- यह वयस्क शिक्षा का एक समृद्ध चित्र विकसित करता है / प्रदान करता है और डीबीई की छवियों से आगे बढ़कर केवल स्कूल के बड़े लोग हैं

Disadvantages of Learner Driver Approach शिक्षार्थी प्रेरित उपागम के नुकसान

- A learner – driven approach often relies on the teacher’s ability to create or select materials appropriate to learner’s expressed needs.
 - It requires skill on the part of the teachers as well as time and resources.
 - It lacks of skill time and resources and makes creating curriculum with this approach difficult.
 - It finds difficult for teachers to find and make acceptable balance among the competing needs and interest of students.
 - Some times students feels uncomfortable with the seemingly ambiguous nature of a curriculum.
 - **शिक्षार्थी प्रेरित उपागम** अक्सर शिक्षार्थी की व्यक्त जरूरतों के लिए उपयुक्त सामग्री बनाने या चयन करने की शिक्षक की क्षमता पर निर्भर करता है।
 - इसके लिए शिक्षकों के साथ-साथ समय और संसाधनों की आवश्यकता होती है।
 - इसमें कौशल समय और संसाधनों की कमी है और इस दृष्टिकोण के साथ पाठ्यक्रम बनाना मुश्किल है।
 - छात्रों की प्रतिस्पर्धी जरूरतों और रुचि के बीच स्वीकार्य संतुलन बनाना शिक्षकों के लिए मुश्किल होता है।
 - कभी-कभी छात्रों को पाठ्यक्रम के प्रतीत होने वाले अस्पष्ट स्वभाव से असहज महसूस होता है।
3. **Critical Approach** : In this approach, students are central to the process of constructing and interpreting knowledge. Critical curriculum activities include journals, portfolios and other autobiographical, literary and artistic methodologies focus less on external objectives than on internal experiences. Teacher identify issues that relate to the experiences and concerns students identify. Reading and writing skills develop in tandem with critical thinking skills, and ultimately, literacy learning becomes a means of transforming students lives and communities. Learners actively create knowledge as they participate in learning by taking a Critical look.

आलोचनात्मक उपागम: इस दृष्टिकोण में, छात्र ज्ञान के निर्माण और व्याख्या की प्रक्रिया के लिए केन्द्रित होते हैं। महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम गतिविधियों में जर्नल, पोर्टफोलियो और अन्य आत्मकथात्मक, साहित्यिक और कलात्मक पद्धति शामिल हैं जो आंतरिक अनुभवों की तुलना में बाहरी उद्देश्यों पर कम ध्यान केंद्रित करते हैं। शिक्षक उन मुद्दों की पहचान करता है जो छात्रों द्वारा पहचाने जाने वाले अनुभवों और चिंताओं से संबंधित हैं। पढ़ना और लिखना कौशल महत्वपूर्ण सोच कौशल के साथ मिलकर विकसित होते हैं, और आखिरकार, साक्षरता सीखना छात्रों के जीवन और समुदायों को बदलने का एक साधन बन जाता है। शिक्षार्थी सक्रिय रूप से ज्ञान का निर्माण करते हैं क्योंकि वे एक महत्वपूर्ण रूप लेते हुए सीखने में भाग लेते हैं।

Advantages of Critical Approach आलोचनात्मक उपागम के लाभ

- It does not ignore the difficulties that learners face in life but provides a way for learners together to meet them head on.
- It does not create a separation between learner’s lives and what they are learning, which as in the learner – driven approach, is motivating.
- It helps learners bridge the “classroom/real world? divide.
- It is helpful to root out the social injustice movement.
- It is helpful in social justice embracement.
- यह उन कठिनाइयों को नजरअंदाज नहीं करता है जो शिक्षार्थी जीवन में सामना करते हैं बल्कि शिक्षार्थियों के लिए एक रास्ता प्रदान करते हैं ताकि वे उनसे मिल सकें।
- यह शिक्षार्थी के जीवन और जो वे सीख रहे हैं, के बीच अलगाव पैदा नहीं करता है, जो कि **शिक्षार्थी प्रेरित** दृष्टिकोण में है, प्रेरित कर रहा है।
- यह शिक्षार्थियों को कक्षा / वास्तविक दुनिया को विभाजित करने में मदद करता है।
- यह सामाजिक अन्याय आंदोलन को जड़ से उखाड़ने में सहायक है।
- यह सामाजिक न्याय में सहायक है

Disadvantages of Critical Approach आलोचनात्मक उपागम के नुकसान

- It takes time.
- Teacher need a particular set of facilitation skills to teach reading and writing.
- Learners may be uneasy because they are not familiar about it.
- The teacher and program need to be committed to supporting learners, rather than abandoning them.
- Teachers need to recognize the potential himself in this approach.
- इसमें समय लगता है।
- शिक्षक को पढ़ने और लिखने को सिखाने के लिए सुविधा कौशल के एक विशेष सेट की आवश्यकता होती है।
- शिक्षार्थी असहज हो सकते हैं क्योंकि वे इसके बारे में परिचित नहीं हैं।
- शिक्षक और कार्यक्रम को शिक्षार्थियों को समर्थन देने के बजाय उन्हें छोड़ने के लिए प्रतिबद्ध होने की आवश्यकता है।
- शिक्षकों को इस दृष्टिकोण में स्वयं को पहचानने की आवश्यकता है।

